कौटिल्य का राजनयिक दृष्टिकोण और भारत की विदेश नीति

मनीषा (शोधार्थी), डॉ सुशीला बेदी दुबे (शोध निदेशक), विभाग – राजनीति विज्ञान, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, चूड़ेला, झुंझुनूं

ईमेलः manishaverma35347@gmail.com

सारांश

कौटिल्य का राजनयिक दर्शन भारतीय कूटनीति का प्राचीन और गूढ़ आधार रहा है। उनके द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में राजनय, युद्ध और शांति, गुप्तचर तंत्र, संधि–नीति, तथा पड़ोसी राज्यों के साथ संबंधों को लेकर जो सिद्धांत प्रस्तुत किए गए हैं, वे आज भी भारत की विदेश नीति में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। इस शोध आलेख में कौटिल्य के विचारों और समकालीन भारत की विदेश नीति के विभिन्न पहलुओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, पड़ोसी नीति, बहुध्रुवीय विश्व में संतुलन बनाए रखने की नीति, और सुरक्षा रणनीतियाँ कौटिल्य के सिद्धांतों से प्रेरणा लेती प्रतीत होती हैं।

प्रमुख शब्द

कौटिल्य, राजनय, विदेश नीति, मंडल सिद्धांत, षाड्गुण्य नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा, गुप्तचर तंत्र, संधि, भारत की कूटनीति

1. भूमिका

भारत की विदेश नीति का स्वरूप स्वतंत्रता के बाद समय के साथ बदलता रहा है, परंतु इसकी जड़ों में यदि देखा जाए तो कौटिल्य का राजनयिक चिंतन आज भी प्रभावी है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जहां शक्ति संतुलन, रणनीतिक साझेदारियाँ और कूटनीतिक संवाद महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं, वहीं कौटिल्य का 'मंडल सिद्धांत', 'षाड्गुण्य नीति' और 'साम, दाम, दंड, भेद' जैसे उपाय आज भी सामयिक प्रतीत होते हैं।

2. कौटिल्य का राजनयिक दृष्टिकोण

(क) मंडल सिद्धांत

कौटिल्य के अनुसार पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से शत्रु होता है और पड़ोसी का पड़ोसी मित्र। भारत की पड़ोसी नीति में यह दृष्टिकोण स्पष्ट दिखता है–पाकिस्तान व चीन के साथ तनाव और अफगानिस्तान, बांग्लादेश जैसे देशों से सहयोग।

(ख) षाड्गुण्य नीति (छह कूटनीतिक विकल्प)

- संधि – मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करना
- विग्रह – संघर्ष या युद्ध की स्थिति
- आसन – तटस्थ बने रहना

- यात्रा – युद्ध के लिए अग्रसर होना
- सामाश्रय – शक्तिशाली राज्य की शरण लेना
- द्वैधीभाव – दोहरा दृष्टिकोण अपनाना

(ग) साम–दाम–दंड–भेद नीति

कूटनीति में इन चारों उपायों का प्रयोग कौटिल्य ने विभिन्न परिस्थिति अनुसार सुझाया है।

(घ) गुप्तचर तंत्र

गुप्तचर प्रणाली को कौटिल्य ने राज्य की रक्षा का अनिवार्य अंग माना है। RAW और IB जैसे संस्थान आधुनिक उदाहरण हैं।

3. भारत की समकालीन विदेश नीति

(क) रणनीतिक स्वायत्तता

भारत किसी एक गुट में शामिल हुए बिना अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखता है–यह कौटिल्यीय युक्ति का आधुनिक रूप है।

(ख) पड़ोस प्रथम नीति

नेपाल, श्रीलंका, भूटान और बांग्लादेश जैसे देशों से संबंधों का सुदृढ़ीकरण।

(ग) एक्ट ईस्ट और लुक ईस्ट नीति

दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों से व्यापार, रक्षा और रणनीतिक सहयोग।

(घ) वैश्विक मंचों पर भागीदारी

G20, BRICS, QUAD, SCO में भारत की सक्रिय उपस्थिति।

4. तुलनात्मक विश्लेषण

कौटिल्यीय सिद्धांत	**भारत की विदेश नीति में उपयोगिता**
मंडल सिद्धांत	पड़ोस प्रथम नीति, सुरक्षा संतुलन नीति
षाड्गुण्य नीति	युद्ध, संधि, तटस्थता और द्वैधी दृष्टिकोण
गुप्तचर तंत्र	RAW, IB, NTRO आदि की भूमिका
साम–दाम–दंड–भेद	पाकिस्तान–चीन के संदर्भ में सर्जिकल स्ट्राइक, आर्थिक दबाव, कूटनीतिक संवाद

5. भारत की विदेश नीति में कौटिल्य के दर्शन की प्रासंगिकता

- **रियलपॉलिटिक और यथार्थवादी दृष्टिकोण**

भारत अब भावनात्मक नीतियों से हटकर राष्ट्रीय हित आधारित रणनीति अपना रहा है।

- **कूटनीतिक लचीलापन**

QUAD और BRICS दोनों में भारत की भागीदारी कौटिल्य के द्वैधी नीति की झलक है।

- **सुरक्षा और शक्ति संतुलन**

भारत की सामरिक नीतिकृविशेष रूप से LAC पर चीन के साथ और LOC पर पाकिस्तान के साथकृदंड नीति के अंतर्गत समझी जा सकती है।

6. समकालीन घटनाओं में कौटिल्यीय प्रभाव

- **डोकलाम संकट (2017)** भारत ने न तो पूरी तरह युद्ध चुना और न ही पूर्ण शांतिकृ बल्कि साम–भेद नीति अपनाई।
- QUAD में भागीदारी कौटिल्य के 'सामाश्रय' और 'संधि' उपायों की आधुनिक व्याख्या।
- अफगानिस्तान और मध्य एशिया नीति दूरवर्ती मंडल देशों के साथ सहयोग को बढ़ाना मंडल सिद्धांत का अनुपालन है।

7. चुनौतियाँ और संभावनाएँ

चुनौतियाँः

- बहुध्रुवीय विश्व में नीतियों का तेजी से बदलना
- चीन और अमेरिका के बीच संतुलन बनाना
- पड़ोस में राजनीतिक अस्थिरता

संभावनाएँः

- वैश्विक दक्षिण में नेतृत्व की भूमिका
- रणनीतिक साझेदारी में लचीलापन
- सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से प्रभाव विस्तार

8. निष्कर्ष

कौटिल्य का राजनयिक दृष्टिकोण न केवल प्राचीन भारत की राजनीति में प्रासंगिक था, बल्कि आज भी भारत की विदेश नीति में गहराई से प्रतिबिंबित होता है। चाहे वह मंडल सिद्धांत हो, षाड्गुण्य नीति हो या साम–दाम–दंड–भेद की रणनीतिकृआज का भारत उन विचारों का यथार्थवादी, व्यावहारिक और नैतिक संतुलन के साथ उपयोग कर रहा है। अतः कौटिल्य का राजनयिक दर्शन भारत की समकालीन विदेश नीति के सिद्धांतों के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. कौटिल्य. अर्थशास्त्र (अनुवादः आर. शमशास्त्री)
2. मेहता, पी.बी. (2020). भारतीय विदेश नीति का पुनर्परिचय
3. थरूर, शशि (2012). पैक्स इंडिका

4. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय. वार्षिक रिपोर्ट (2020–2023)

5. राजमोहन, सी. (2019). भारत की नई विदेश नीति की दिशा

6. शर्मा, आर. (2021). प्राचीन भारत में रणनीतिक चिंतन

7. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद रिपोर्ट, 2022

8. राव, एन. (2020). "भारत की पड़ोसी नीति में शक्ति–संतुलन," इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिसी स्टडीज

9. यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (UGC) Ancient Indian Political Thought Reader

10. भारतीय रक्षा मंत्रालय. रणनीतिक श्वेत पत्र ;Strategic White Paper)